



॥ श्री सीता माता स्तुति ॥
॥ श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री सीता माता स्तुति ॥

॥ श्री सीता माता स्तुति ॥

ॐ श्रीं सीतायै नमः।

जय जनकनन्दिनी जगदम्बे, जय वैदेही दयामयी।
रामवल्लभे धर्मस्वरूपे, भवभयहारिणि शुभमयी॥
भूमिजा त्वं महालक्ष्मी, करुणा की तुम धारा हो।
भक्तों के जीवन में माता, सुख-शांति की उजियारा हो॥
मिथिला की तुम दिव्य किशोरी, जग की पावन माता हो।
मर्यादा, सेवा, प्रेम, त्याग की, अनुपम दिव्य विधाता हो॥
वन-वन संग श्रीराम चलीं, पतिव्रता की शान बनीं।
सुख-दुःख में समभाव रखकर, नारी धर्म की मान बनीं॥
अशोक वाटिका में रहकर भी, राम नाम का ध्यान किया।
धैर्य, सत्य और अटल विश्वास से, जीवन को महान किया॥
हनुमत को चूड़ामणि देकर, प्रेम-संदेशा पहुँचाया।
भक्ति, श्रद्धा और विश्वास का, जग को पावन मार्ग दिखाया॥
लव-कुश की वात्सल्य-मूर्ति, ममता की अविरल धारा।
करुणा, क्षमा, दया की देवी, तुम हो जग की पालनहारा॥
हे जानकी! दुःख दूर करो, मन में भक्ति का दीप जलाओ।
क्रोध, मोह, अहंकार मिटाकर, प्रेम और सद्गुण अपनाओ॥
पति-पत्नी में प्रेम बढ़ाओ, परिवार में सुख बरसाओ।
संतान, सौभाग्य, यश और कीर्ति, अपने भक्तों को दिलवाओ॥
रोग, शोक, भय और संकट, चरणों में सब नष्ट हो जाएँ।
जो श्रद्धा से नाम तुम्हारा जपे, उसके सभी मनोरथ फल पाएँ॥
हे सीताराम की आराध्या, हृदय कमल में सदा विराजो।
जीवन के हर शुभ संकल्प को, अपनी कृपा से सफल बनाओ॥
करुणामयी जनकदुलारी, हम सब पर उपकार करो।
भक्ति, ज्ञान, वैराग्य प्रदान कर, भवसागर से पार करो॥

॥ प्रार्थना ॥

त्वमेव माता च वैदेहि, त्वमेव शरणं मम।
रामप्रिये कृपासिन्धो, रक्ष रक्ष नमोऽस्तु ते॥
सीताराम चरणारविन्दे, नित्यं मे रतिरस्तु वै।
जन्म-जन्म में भक्ति देना, यही विनती स्वीकार कर॥
॥ इति श्री सीता माता स्तुतिः सम्पूर्णा ॥

